नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेत खनन : सुप्रीम कोर्ट की चिंता का संज्ञान लें

चंबल के शांत बहाव में छिपा संकट अब देश की सर्वोच्च अदालत तक पहुंच चुका है. राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य में अवैध रेत खनन का मुद्दा केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि पर्यावरणीय न्याय और प्रशासनिक जवाबदेही की एक बड़ी परीक्षा बन गया है. सुप्रीम कोर्ट द्वारा मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश को नोटिस जारी करना इस बात का संकेत है कि अब इस संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र के साथ लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी.

चंबल अभयारण्य का महत्व केवल एक संरक्षित क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत जैव विविधता केंद्र के रूप में है. यह घड़ियालों का सबसे बड़ा प्राकृतिक आवास है, जहां उनकी प्रजाति को बचाने के लिए दशकों से प्रयास किए जा रहे हैं. इसके अलावा गंगा डॉल्फिन और लाल मुकुट वाले कछुए जैसी दुर्लभ प्रजातियां इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर भी विशेष बनाती हैं. ऐसे में अवैध खनन केवल रेत की चोरी नहीं, बल्कि इन जीवों के अस्तित्व पर सीधा हमला है.

रेत खनन का प्रभाव सतही नहीं होता. यह नदी की धारा, तलछट संरचना और जल प्रवाह को प्रभावित करता है. इससे घड़ियालों के अंडे देने के स्थान नष्ट होते हैं और डॉल्फिन के लिए आवश्यक गहराई और शांत जल क्षेत्र खत्म हो जाते हैं. परिणामस्वरूप पूरा पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाता है. यही कारण है कि अदालत ने इसे गंभीर कानूनी उल्लंघन मानते हुए सख्त टिप्पणी की है.

सबसे चिंताजनक पहलू प्रशासनिक निष्क्रियता है. सुप्रीम कोर्ट का यह कहना कि संबंधित विभागों की विफलता उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार बनाती है, एक कड़ा संदेश है. वन विभाग, खनन विभाग और स्थानीय पुलिस की संयुक्त जिम्मेदारी है कि वे इस तरह की गतिविधियों को रोकें. लेकिन जमीनी हकीकत यह दर्शाती है कि कई बार या तो मिलीभगत होती है या फिर इच्छाशक्ति का अभाव. अवैध खनन एक संगठित गतिविधि बन चुका है, जिसमें स्थानीय नेटवर्क से लेकर बड़े आर्थिक हित जुड़े होते हैं.

तीनों राज्यों की भौगोलिक साझेदारी इस समस्या को और जटिल बनाती है. चंबल नदी तीन राज्यों से होकर गुजरती है, जिससे समन्वय की कमी का फायदा खनन माफिया उठाते हैं. एक राज्य में सख्ती होने पर गतिविधियां दूसरे हिस्से में शिफ्ट हो जाती हैं. इसलिए इस समस्या का समाधान केवल राज्य स्तर पर नहीं, बल्कि अंतर-राज्यीय समन्वय और एकीकृत रणनीति से ही संभव है.

इस संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप एक अवसर भी है. यदि राज्य सरकारें इसे केवल औपचारिक जवाब तक सीमित न रखकर ठोस कार्ययोजना बनाएं, तो चंबल को बचाया जा सकता है. इसके लिए तकनीकी निगरानी, ड्रोन सर्विलांस, कड़ी दंडात्मक कार्रवाई और स्थानीय समुदायों की भागीदारी जरूरी है. साथ ही वैकल्पिक आजीविका के विकल्प भी विकसित करने होंगे, ताकि स्थानीय लोग अवैध खनन पर निर्भर न रहें. कुल मिलाकर चंबल का सवाल केवल एक नदी या अभयारण्य का नहीं है. यह हमारे विकास मॉडल की दिशा पर भी सवाल उठाता है. क्या हम अल्पकालिक आर्थिक लाभ के लिए अपनी प्राकृतिक विरासत को दांव पर लगाते रहेंगे, या फिर सतत विकास की ओर बढ़ेंगे. सुप्रीम कोर्ट की सख्ती ने गेंद अब सरकारों के पाले में डाल दी है. अब देखना यह है कि वे इस चेतावनी को अवसर में बदल पाती हैं या नहीं.

संसद नियमों व परंपरा से चलती है, जिद से नहीं

नरेंद्र सिंह तोमर
अध्यक्ष, मप्र विधानसभा

विपक्ष अपनी अनुशासहीनता के चलते नियमों के पर्याय लोकसभा अध्यक्ष पर ही निर्मूल आरोप लगाता है तो उसकी परिणति ऐसी ही होती है. अब तक भारतीय लोकतांत्रिक परंपराएं 76 वर्ष की यात्रा पूर्ण कर चुकी हैं. वरिष्ठ नेताओं की तीखी बहसें, आरोप-प्रत्यारोप, विरोध और असहमतियों के लंबे विमर्श लोकसभा और राज्यसभा के गौरवशाली अतीत में दर्ज हैं. कुछ अप्रिय घटनाक्रम भी हुए लेकिन नियमों और मान्य परंपराओं की मर्यादाओं को कभी जानबूझ कर ओझल नहीं होने दिया गया. सत्ता पक्ष और विपक्ष ने एक-दूसरे की सहमति और असहमति का सदैव सम्मान और आदर किया है. फिर अब ऐसा क्या हुआ कि विपक्ष आक्रामकता के चरम पर पहुंच कर मर्यादाओं का ध्यान नहीं रख रहा है? यह प्रश्न सामयिक है और इस पर चिंतन होना चाहिए, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के अध्यक्षीय कार्यकाल को देखें तो पाएंगे कि विपक्ष के जिद्दी और आक्रामक रवैये के क्षणों में भी उन्होंने अकल्पनीय संयम, संतुलन और निष्पक्षता का परिचय दिया है. वे नियमों के पालन के प्रति सजग थे और यही सजगता विपक्ष को खटकती रही. अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में ओम बिड़ला ने निरंतर यह प्रयत्न किया है कि अधिक से अधिक सांसदों को

स्पीकर बिड़ला का उल्लेखनीय योगदान

भारतीय संसदीय प्रक्रिया उन मानक प्रक्रियाओं में सम्मलित हैं जिसका अनुकरण पूरी दुनिया के लोकतंत्र करते हैं. बीते कुछ वर्षों में विपक्ष ने जिस व्यवहार का प्रदर्शन किया है, वह कार्यवाहियों में बाधा ही नहीं अपितु लोकतंत्र को ठेस पहुंचाने वाला कार्य है. लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के विरुद्ध लाया गया विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव सदन में खारिज हो गया. संसद नियमों और मान्य परंपराओं से संचालित होती हैं. वह विपक्ष या सत्ता पक्ष की मन-मर्जियों से संचालित नहीं हो सकती.

सदन में बोलने का अवसर मिले. युवा सांसदों, पहली बार निर्वाचित होकर आए जनप्रतिनिधि को, महिला सांसदों और संख्या में कम सांसदों को भी पर्याप्त समय देना सुनिश्चित किया गया. ऐसा होने पर ही 17 वीं लोकसभा ने लगभग 97 प्रतिशत की कार्य उत्पादकता हासिल की है. अपने कार्यकाल में नियमों और प्रक्रियाओं को समृद्ध करने की लोकसभा अध्यक्षों की परंपरा को अग्रसर करते हुए ओम बिड़ला ने नव निर्वाचित सांसदों के लिए प्रबोधन कार्यक्रम आयोजित

कर उन्हें संसदीय प्रक्रिया, नियमों और संसदीय परंपराओं से परिचित करवाया. लोकसभा के संसदीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान 'प्राइड' के माध्यम से विभिन्न विधानसभाओं तथा संसद के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए. समिति प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से पीठासीन अधिकारियों की एक समिति का गठन भी किया गया, जिसका उद्देश्य संसद तथा राज्य विधानसभाओं की समिति व्यवस्था की समीक्षा करना

है. ओम बिरला के नेतृत्व में लोकसभा को 'पेपरलेस' बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ है. डिजिटल संसद प्लेटफॉर्म की स्थापना, सांसदों के लिए डिजिटल अटेंडेंस प्रणाली और ऑनलाइन ऑनबोर्डिंग जैसी व्यवस्थाएं इसी परिवर्तन का हिस्सा हैं. मंत्रियों द्वारा सदन में दिए गए आश्वासनों की निगरानी के लिए 'ऑनलाइन एश्योरेंस मॉनिटरिंग सिस्टम' को भी सशक्त किया गया, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही में वृद्धि हुई है.

संसदीय कार्यवाही में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए. इस तकनीक के माध्यम से संसद की 18,000 से अधिक घंटों की ऐतिहासिक कार्यवाही का डिजिटलीकरण किया गया. इसके बाद भी यदि संसद में उनके विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है, तो यह सिर्फ एक प्रक्रिया भर नहीं है बल्कि संसदीय परंपराओं पर ही प्रश्नचिह्न है. विपक्ष का यह व्यवहार लोकतांत्रिक संसदीय मर्यादाओं के अनुकूल नहीं है.

विंध्य की डायरी

कांग्रेस के सक्रिय चेहरे चार दिवारी तक सीमित

डॉ. रवि तिवारी

कांग्रेस के सृजन संगठन अभियान के बाद विन्ध्य में पार्टी को रिफॉर्म करने की जो कोशिश शुरू हुई उसने पार्टी के परफॉर्म पर सीधा असर डाला है. फिलहाल हालत यह हैं कि विन्ध्य में ज्यादातर सक्रिय चेहरों ने अपने आप को अपनी चारदीवारी तक सीमित कर लिया है.

लड़खड़ाती संगठन की बैसाखी के सहारे सिरमौर बनने का सपना संजोए पदाधिकारी अपने बलबूते पर न तो कोई आंदोलन खड़ा कर सकते न ही खुलकर पार्टी के किसी आह्वान पर अपनी भूमिका तय कर सकते.राजनीति में हर पार्टी को ऐसे कार्यकर्ताओ और नेताओं की जरूरत होती है जो पार्टी की रीति, नीति को आगे बढ़ाने के साथ अपनी वफादारी को भी सिद्ध करते रहे.विन्ध्य में सत्तारूढ़ दल की अंदरूनी रणनीति के कारण विश्वास के संकट से जूझ रही कांग्रेस के नए चेहरे आने वाले दिनों में अपनी निष्ठा कायम रख पाएंगे, इसको लेकर घर बैठे नेता खुलकर अपनी बात कह रहे हैं. संदेह के घेरे में आ चुके नेताओं पर अब पार्टी संगठन का भरोसा नहीं रहा और न ही घर बैठे नेताओं को सक्रिय करने का स्थानीय स्तर पर प्रयास किया जा रहा.

भाजपा ने शुरू किया प्रशिक्षण वर्ग

आए दिन पदाधिकारियों और शासन के अधिकारियों के बीच हो रही अनुशासन हीनता की घटनाओं पर स्थाई तोर पर रोक लगाने की दृष्टि से भारतीय जनता पार्टी ने नए पदाधिकारियों को पार्टी की गाइडलाइन बताने के लिए बड़े पैमाने पर जिला व मंडल स्तर पर प्रशिक्षण वर्ग आयोजित करने का निर्णय लिया है.

विंध्य के कुछ जिलों में इस प्रकार के कार्यक्रम शुरू भी कर दिए गए हैं. इस प्रकार के कार्यक्रमो को सम्बोधित करने के लिए पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया है.वर्ष भर भाजपा में प्रशिक्षण जैसे या अन्य कार्यक्रम चलते रहते है यहा संगठनात्मक गतिविधिया संचालित रहती और नये लोगो को पार्टी से जोडने का काम चलता रहता है

अधिकारियों का उत्साह ठंडा पड़ा

रीवा संभागायुक्त बी एस जामोद ने नवाचार के तहत सम्भाग के अधिकारियों से सप्ताह में एक दिन वाहन के बजाय साइकिल से कार्यालय जाने की सलाह दी थीं. साहब के आदेश का पालन भी होने लगा था.इस योजना लेकर पहले अधिकारियों में जो उत्साह दिखाई दे रहा था, वह अब धीरे-धीरे कम होता नजर आ रहा है. हालांकि संभागायुक्त अभी भी मंगलवार को साइकिल से कार्यालय जाते हैं. उनके साथ-साथ कुछ संभागीय अधिकारीगण भी साइकिल चलाकर कार्यालय पहुंचते है पर देखा गया है अभियान की हवा निकल रही है ।

दुनिया को खाक न कर दे यह जंग!

अमेरिका व इजराइल द्वारा ईरान पर जबरन थोपा गया युद्ध अब ऐसे मोड़ पर आ गया है, जब उसकी शिद्दत पूरी दुनिया महसूस कर रही है; क्योंकि ब्रेंट क्रूड के दाम बढ़कर प्रति बैरल 118 डॉलर हो गए हैं और गैस के दामों में 17 से 30 फीसदी का इजाफा हुआ है. जब तेल व गैस के दाम बढ़ते हैं, तो हर चीज महंगी हो जाती है और पिसता बेचारा आम आदमी है. तेल के दाम बढ़ने (और रुपये के कमजोर होने) से दलाल स्ट्रीट के निवेशक भी डर गए हैं, विशेषकर इसलिए भी कि एचडीएफसी बैंक के नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन अतानु चक्रवर्ती ने अचानक अपने पद से इस्तीफा दे दिया. इससे इस बैंक के शेयरों में 5 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आ गई. इस सबका प्रभाव यह हुआ कि 19 मार्च को सेंसेक्स में लगभग 2,500 पॉइंट्स की गिरावट आई, जोकि एक दिन में आज तक की छठी सबसे बड़ी गिरावट है. निवेशकों के लिए अप्रैल 2025 के बाद यह सबसे खराब दिन रहा जब तकरीबन 13 लाख करोड़ रुपये स्वाहा हो गए. इसके बावजूद जंग पर विराम लगने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं. ईरान के पास अब खोने को कुछ नहीं है, क्योंकि उसकी टॉप लीडरशिप को खत्म कर दिया गया है, उसने युद्धविराम से साफ इंकार कर दिया है. उसका कहना है कि 'जंग तुमने शुरू की थी, खत्म हम करेंगे'. जब कोई व्यक्ति मरने से न डरता हो तो उसे रोकना कठिन हो जाता है. दूसरी ओर पेंटागन ने इस युद्ध को फंड करने के लिए 200 बिलियन डॉलर की मांग की है. जितना पैसा इस जंग में धुआं-धुआं होता जा रहा है, उसका संसार पर उतना ही भयानक असर पड़ेगा. दुनिया मंदी व महंगाई की चपेट में आती नजर आ रही है और तीसरे विश्व युद्ध का खतरा भी मंडरा रहा है. इस संकट के लिए इजराइल जिम्मेदार है, जिसने ईरान के साउथ पारस फॉसिल गैस फील्ड पर हमला किया, अंतर्राष्ट्रीय नियमों के तहत तेल, गैस आदि आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर पर हमला करने की मनाही है. ईरान पहले ही कह चुका है कि अगर उसके तेल व गैस फील्ड्स पर हमला होगा तो वह भी उसी स्वर में जवाब देगा. उसने इजराइल, कुवैत, कतर, सऊदी अरब, जॉर्डन, यूएई, ओमान और बहरीन के ऐसे ही ठिकानों पर अपनी मिसाइलें बरसाईं. सबसे बड़ा हमला कतर की एनर्जी एलएनजी फैसिलिटी पर किया गया. -विजय कपूर

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

उधर दादा ट्रंप, इधर दीदी ममता हठीले स्वभाव की दोनों में समता

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कुछ नेता स्वभाव से अकड़बाज होते हैं. वह किसी की नहीं सुनते. उनका रवैया ऐसा रहता है कि मेरी मुर्गी की डेढ़ टांग! वह मानकर चलते हैं कि जहां हम खड़े हो जाते हैं, लाइन वहीं से शुरू होती है. अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप और बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपनी धुन के पक्के व्यक्ति हैं जिन्हें दूसरे की बात या सलाह बिल्कुल नहीं पटती. उनकी प्रवृत्ति एकाधिकारी या तानाशाही होती है.'

हमने कहा, 'आपने सही पहचाना. ट्रंप यदि दुनिया के दादा हैं तो ममता भी बंगाल की दीदी हैं. उनका दिल कहता है- मैं चाहे ये करूं, मैं चाहे वो करूं, मेरी मर्जी! ट्रंप ने अपनी सनक में इजराइल का साथ देकर खुद को ईरान के साथ युद्ध में झोंक दिया और समूचे विश्व के लिए आफत ला दी. गैस और तेल का संकट उन्हीं के कारनामों की वजह से है. ईरान चोट खाए सर्प की भांति अमेरिका के मित्र खाड़ी देशों के गैस फील्ड और रिफाइनरी को निशाना बना रहा है. होर्मुज की खाड़ी से तेलवाही जहाजों का यातायात रोक कर ईरान ने

दिखा दिया कि वह अरब देशों की अर्थव्यवस्था को कैसे नुकसान पहुंचा सकता है. उसने अरब शेखों की शेखी भुला दी. कुवैत, कतर, यूएई, सऊदी अरब, जॉर्डन सभी परेशान हैं. अमेरिका ने ईरान पर हमला कर अरब राष्ट्रों का अरबों डॉलर का नुकसान कर दिया. इजराइल में इतनी धमक नहीं थी कि ईरान से अकेले पंगा ले सके इसलिए उसने खुशामद कर ट्रंप को पटाया और उकसाया. ईरान के टॉप लीडर मारे गए लेकिन वह अब भी घुटने नहीं टेक रहा है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज ट्रंप की दादागिरी की बहुत चर्चा हो गई. अब बंगाल की ममता की दीदीगिरी पर ध्यान दीजिए जिन्होंने गवर्नर को निशाने पर लेते हुए कहा कि आरएन रवि केंद्र का आदमी है. यदि वाशिंगटन डीसी के दादा ट्रंप तय करना चाहते हैं कि ईरान का अगला नेता कौन होगा तो बंगाल की दीदी भी चाहती हैं कि राज्यपाल केंद्र का भेजा न होकर उनके किसी गली-मोहल्ले का हो. दुनिया ट्रंप से परेशान है तो चुनाव में ममता बीजेपी को परेशान कर डालेंगी. मोदी-शाह को उनके तीखे वाकप्रहार झेलने पड़ेंगे. दीदी की दहलीज को पार करना लोहे के चने चबाने जैसा है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12205

-डॉ. सागर खादीवाला

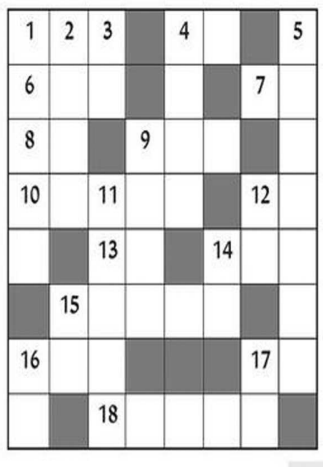

(उर्दू) 2. लकड़ी का बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्रायः इमारत में काम आता है 3. पुरुष, पुरुष जाति का 4. मंदिर के भीतरी भाग में रहने वाला पुजारी 5. गरीबों और दिन दुखियों के रूप में रहने वाला भगवान 9. शुक्रवार और रविवार के बीच का दिन 11. मध्य, बीच, बीच में (उर्दू) 12. अगहन के बाद और माघ के पूर्व का महीना 14. नौ का वर्गमूल 15. अग्नि 16. मरा हुआ 17. आगे या पीछे क्रमानुसार आने वाला

बाएं से दाएं
1. प्रदीप्त, चमकदार (उर्दू) 4. मांगना, भीख (सं.) 6. विष (उर्दू) 7. झरना, निर्झर (सं.) 8. बेटी का बेटा, दोहता 9. श्रेष्ठ 10. बड़े लोगों की मालिश करने वाला 12. महाराष्ट्र का एक ऐतिहासिक शहर 13. कृष्ण, दाना, सूजी 14. जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई संबंध न हो, गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला 15. हिंदी फिल्मों का एक नायक 16. शिकार (सं.) 17. तीर 18. नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियां

ऊपर से नीचे
1. प्रतिदिन का काम लिखने की बही

Solution 12204

अ	व	मा	न	ना		सू	बा
दा	न		म		प्र		घ
ल		ज	न	सं	हा	र	
त		मा		श	र	ब	त
	अ	ना	श्र	य			लि
च	ना		म		आ	ग	त
म	द	र	सा		दा	म	
न	र		ध्य		न	क	ब

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अत्याधिक परिश्रम केबाद आंशिक सफलता मिलेगी, मित्र के कारण विवाद होगा, मान प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें, मन में खिन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में घरेलू कार्यों में रूचि रहेगी, बैचारिक वाद विवाद होगा, सत्संग में मन शांत रहेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक मित्र का सहयोग रहेगा, व्यवसाय में वृद्धि मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को सत्ता का सुख रहेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा,सिंह राशि के व्यक्तियों को शिक्षा में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारी के कोप का सामना करना पड़ेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियोंको नवीन योजनों में पूँजी निवेश होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का सहयोग और सुख शांति रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील व्यक्तित्ववान परिश्रमी होगा. शरीर से कोमल एवं भावुक मन का होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. कम बोलेगा, जो भी बोलेगा, वह बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण होगा. यात्राप्रिय रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

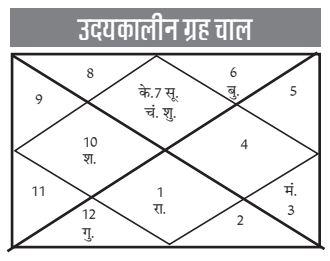

पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2083 चैत्र शुक्ल पंचमीं चन्द्रवासरे रात 9/18, कृतिका नक्षत्रे रात 11/28, विष्कुम्भ योगे दिन 2/56, वव करणे सू.उ. 5/59, सू.अ. 6/1, चन्द्रचार मेष प्रातः 6/40 से वृषभ, पर्व- श्रीराम राज्य महोत्सव, शु.रा. 2, 4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल पंचमीं को कृतिका नक्षत्र के प्रभाव से समस्त प्रकार के अनाजों में जैसे गेहूँ, जौ, चना, मक्का, बाजरा, के भाव में जोरदार मंदी होने की संभावना है, तिल, तेल, तिलहन,सरसों के भाव में साधारण नरमी होगी. भाग्यांक 1475 है.

मेष- किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, खर्च बढ़ेगा. शत्रु वर्ग पराजित होगा. निजी मामलों को स्वयं सुलझाने का प्रयास करें. हर्ष बना रहेगा.

वृषभ- व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. अनावश्यक विवादों को टालें.

मिथुन- धार्मिक कार्यों में खर्च होगा. आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में प्रगति होगी. मन में शांति और संतोष बना रहेगा. साहसिक प्रयत्नों की पूर्ति होगी.

कर्क- नौकरी एवं राजकीय कार्यों में संलग्नता रहेगी. मन में संतोष बना रहेगा. सोचे हुये कार्यों में विलंब हो सकता है. परिश्रम की अधिकता बनी रहेगी.

सिंह- घर में अतिथि आगमन का योग है. अनावश्यक विवाद न बढ़ायें. कार्य में विलंब होगा. मांगलिक कार्यों पर विचार होगा. यात्रा सुखद रहेगी.

कन्या- राजनैतिक कार्यों में सावधानी रखें. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. कार्य में विलंब होगा. धार्मिक यात्रा हो सकती है. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

तुला- आमोद प्रमोद के साधन उपलब्ध रहेंगे. किसी व्यक्ति से भेंटवार्ता होगी. अतिथि आगमन का योग है. पत्राचार करते समय सावधानी सतर्कता रखें.

वृश्चिक- कौटुम्बिक कार्यों में सावधानी रखकर कार्य करें. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी. अतिथि सत्कार होगा. मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

धनु- कौटुम्बिक मामलों में सावधानी रखें. वायदा सोच विचार कर करना उचित होगा. खर्चों पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें. प्रवास का योग है.

मकर- प्रतिष्ठा एवं सम्मान मिलेगा. शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी. अतिथि आगमन हो सकता है. व्ययभार बढ़ेगा. परिश्रम अधिक करना पड़ सकता है.

कुम्भ- वाहनादि का प्रयोग करते समय सावधानी रखें. निजी पुरूषार्थ की प्राप्ति होगी. मित्र के संबंध में नवीन समाचार प्राप्त हो सकता है.

मीन- पारिवारिक मतभेद हो सकते हैं. दूसरों के कारण आपको परेशानी हो सकती है. अज्ञात भय एवं चिन्ता का समाधान होगा. परिश्रम रहेगा.

SUDOKU 7337

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7336

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1